(197) (क) स्वतंत्रता के बाद पहली बार भाजपा ने संघ का वर्चस्व स्वीकार करके लोकतंत्र की राह छोडना शुरू कर दिया। अब लोकतंत्र की दिशा मे आंशिक रूप से नितीश कुमार दिख रहे है या मनमोहन सिंह

(ख) रामदेव जी द्वारा नये दल बनाने पर समीक्षा

(ग) मेरी सात दिनो की रामानुजगंज मे सम्पन्न ज्ञान कथा का सक्षिप्त विवरण

क्या भाजपा ने भी हार स्वीकार कर ली ?

पूरा विश्व इस बात को समझ चुका है कि व्यवस्थापक के लिये तानाशाही सबसे आसान और सफल मार्ग होता है तथा लोकतंत्र सबसे कठिन और सफलता के प्रति संदेह युक्त । फिर भी व्यवस्थापक लोकतंत्र के प्रति सम्मान को देखते हुए लोकतंत्र को आदर्श मार्ग घोषित करता है और थोड़े दिनो के बाद धीरे धीरे तानाशाही की दिशा में बढ़ता जाता है। पश्चिम के लोकतांत्रिक देश इस संकट से आंशिक रूप से बाहर हैं किन्तु अन्य सभी देशो की शासन की व्यवस्थाएँ इसी नियम के आधार पर कार्य करती है। साम्यवादी देशों ने तो तानाशाही को ही लोकतंत्र कहना शुरू कर दिया है। मुस्लिम देश अलग अलग दिशाओं में बंटे है किन्तु एक बात पर एक मत है कि धर्म और तानाशाही का तालमेल आवश्यक है। दक्षिण एशिया के अनेक देश घोषित से तो लोकतंत्र का आचरण करते हैं किन्तु अव्यवस्था के कारण तानाशाही की दिशा में बढ़ना उनकी मजबूरी हो जाती है। भारत भी दक्षिण एशिया के ऐसे ही देशों में से एक है।

भारतीय शासन व्यवस्था ने स्वयं को पूरी तरह लोकतांत्रिक घोषित कर रखा है। नक्सलवादियों को छोड़कर सभी दल लोकतंत्र को आदर्श स्वीकार करते है किन्तु किसी भी राजनैतिक दल को लोकतंत्र पर जरा भी विश्वास नहीं है। सभी दल समझते हैं कि लोकतंत्र तो सत्ता तक पहुंचने का माध्यम मात्र है। व्यवस्था का आधार तो तानाशाही ही है चाहे वह घोषित हो या अघोषित। साम्यवादी दलों ने तो बिना लागलपेट के अपने स्वरूप को स्पष्ट कर दिया था। कांग्रेस पार्टी लोकतंत्र के नाम पर तानाशाही की दिशा में बढ़ती गई। जेडीयू इस जिद पर अड़ी रही कि वह टूट जायेगी, असफलता झेलेगी किन्तु लोकतंत्र से पीछे नहीं हटेगी । भाजपा को छोड़कर अन्य कोई भी ऐसा दल नहीं है जहां लोकतंत्र का नाम निशान भी हो । सिर्फ भाजपा ही एक ऐसा दल बचा जो लोकतंत्र और तानाशाही के बीच आजतक कभी स्पष्ट नही हो पाया कि उसकी दिशा क्या है ? किसी राजनैतिक दल के लिये साठ वर्षो तक का दिशा भ्रमित जीवन काल अपने आप में रेकार्ड ही है और वह दिशा भ्रम भी न नीतियों को लेकर ही न कार्यक्रमों को लेकर। वह दिशा भ्रम यदि लोकतंत्र या तानाशाही को लेकर रहे तो इसे आश्चर्य ही कह सकते है किन्तु यह दिशा भ्रम तो साठ वर्षो तक रहा ही ।

भारतीय जनता पार्टी जन्म काल से ही इस भ्रम से जूझती रही । प्रारंभ से ही इसकी विचारधारा में दो समूहों का समावेश था एक संघ विचारधारा जो अधिकतम तानाशाही की पक्षधर रही और दूसरी अटल बिहारी वाजपेयी की जो तानाशाही और लोकतंत्र का समन्वय चाहते थे। अटल जी भी यदि पूरी तरह लोकतंत्रवादी होते तो भाजपा कब की दो फाड़ हो जाती क्योंकि तानाशाही और लोकतंत्र एकसाथ चल ही नही सकते किन्तु अटल जी का समन्वय करना स्वभाव था और संघ की मजबूरी। अटल जी की भारतीय जनमानस में इतनी अच्छी छवि थी कि संघ मनमसोस कर रह जाता था। उसे कई बार अटल जी पर क्रोध भी आता था किन्तु कुछ कर भी

नही पाता था और दॉंत पीसते हुए चुप रह जाता था। जब अटल जी ने गांधीवादी समाजवाद का नारा दिया था उस समय संघ का धैर्य टूटते टूटते बच गया था। इसी तरह अटल जी के प्रधानमंत्रित्व काल में गुजरात दंगो के सूत्रधार नरेन्द्र मोदी के विरूद्ध होते हुए भी अटल जी को झुकना पडा क्योंकि इससे अधिक कडा होने का संदेश टूटने तक जा सकता था।

संघ हमेशा केन्द्रित शासन व्यवस्था का पक्षधर रहा है जिसका अन्तिम अर्थ है तानाशाही। अटल जी हमेशा विकेन्द्रित शासन व्यवस्था के पक्षधर रहे जिसका अन्तिम अर्थ है लोकस्वराज्य। भाजपा राष्टीय राजनैतिक व्यवस्था में तो हमेशा अस्पष्ट रही और अपनी आन्तरिक व्यवस्था में सामंजस्यवादी । अब तक का उसका यही इतिहास रहा है । संघ ने भरपूर प्रयास किया कि वह किसी तरह भाजपा पर नियंत्रण कर ले किन्तु अटल जी कभी लोकतंत्र को छोड़ने के लिये तैयार नही हुए। संघ ने आडवानी जी को भी बढ़ाकर अपना उद्देश्य पूरा करना चाहा किन्तु सफल नहीं हुआ क्योकि अडवानी जी पदलोलुप व्यक्ति निकले और अंत मे संघ को ही उन पर नियंत्रण करना पड़ा । यदि आडवानी जी ने अटल जी के विरूद्ध इच्छा पैदा न की होती और संघ का सहारा न मिला होता तो सन चार के चुनावों मे भाजपा का भविष्य बहुत उज्वल था । किन्तु भाजपा जीतते जीतते सत्ता खो बैठी और यह सत्ता पतन पूरी तरह संघ अटल के सामंजस्य मे कमी का परिणाम था जिसमे अडवानी जी संघ के एक मुहरे के रूप में काम कर रहे थे । परिणाम सबने देखा और भाजपा की हाथ में आई जीत फिसल गई।

अब अटल जी उम्र के कारण परिदृष्य से बाहर हो गयें हैं और अडवानी जी भी संघ के साथ विश्वासघात करने के कारण । अब भाजपा को संघ की दिशा चुनने मे कोई बाधा नही है । जसवन्त सिंह जी को रास्ता दिखाकर संघ ने अटल ग्रुप को अपना संदेश भी दे दिया और भाजपा मे अटल ग्रुप के लोकतंत्र समर्थको ने उस संदेश का आशय भी समझ लिया । अब भाजपा दो विचारधाराओ के बीच दुविधा ग्रस्त न होकर एक सीधी सपाट संघ की लाइन पर चल पडी है जिसकी आंतरिक व्यवस्था में पूर्ण तानाशाही होती है । लोकतंत्र तो सिर्फ नाम के लिये ही है । अब भाजपा के अध्यक्ष चाहे नितिन गडकरी जी हों या कोई और इससे कोई फर्क नहीं पडता । वास्तव मे अब भाजपा और संघ के बीच जो दो नावों की सवारी हो रही थी उसमें संघ की निर्णायक विजय हो चुकी है । अब भाजपा ने भी स्वीकार कर लिया है कि किसी भी व्यवस्था को ठीक ढ़ग से चलाने मे लोकतंत्र एक बडी बाधा है और अन्त मे उसे घूम फिरकर तानाशाही का ही मार्ग पकडना पडेगा।

भाजपा का यह घटना क्रम भाजपा को नई दिशा देगा । लगातार कमजोर होती जा रही भाजपा को नई शक्ति मिलेगी । आंतरिक अव्यवस्था और टकराव समाप्त होगे। पूरी पार्टी संघ के अनुशासन तले एक जुट होकर काम करेगी । पार्टी के आन्तरिक चुनावों का भी नया सिस्टम लागू हो चुका है । इस सिस्टम से भी आन्तरिक लोकतंत्र को तिलांजलि दे दी गयी है जिसका अर्थ है अव्यवस्था की समाप्ति । नीचे के स्तर से ही नयी चुनाव प्रणाली काम करने लगी है। न कोई टकराव है न कोई बयानबाजी । सब कुछ अनुशासित तरीके से सम्पन्न हो रहा है। चरित्रवान कर्मठ लोग आगे आने लगें हैं। पद लोलुप खेमेबाज लोगो को नये संदेश दिये जा रहे है । थोडे ही दिनो मे भाजपा एक अनुशासित सक्रिय, प्रतिपक्ष के रूप में भारत में दिखने लग जायगी । स्वाभाविक ही दिखता है कि धीरे धीरे भाजपा संघ के नेतृत्व में मजवूत होगी।

यह सब होते हुए भी इस नये घटना क्रम का एक दुष्प्रभाव होगा कि संघ धीरे–धीरे कमजोर होगा । अब तक संघ की यह रणनीति रही है कि वह भाजपा की बदनामी से अपने आप को अलग करने मे सफल रहा। अब नई स्थिति मे संघ इस प्रकार नही बच सकता। भाजपा जब तक सत्ता मे नही आती तब तक उसे चरित्र के मामले मे समझौता करना पडेगा ही । यह समझौता संघ के लोग आसानी से स्वीकार नही करेंगे क्योंकि चरित्र के मामले में संघ कार्यकर्त्ताओं की एक अपनी अलग पहचान रही है। भाजपा संघ के नेतृत्व में चलते हुये भी लोकतंत्र के स्वाभाविक दोषों से निकल नही पायेगी और संघ कलंक को सुनने का अभ्यस्त नही है। या तो संघ की मजबूरी होगी कि वह अपने चरित्र की परिभाषा से समझौता करे या भाजपा की बुराइयो का परिणाम भुगते । मेरे विचार में संघ भाजपा को शक्ति देगा भले ही उसकी कुछ बदनामी भी हो या कुछ कमजोरी भी आवे । संभावना यही दिखती है आगे चाहे जो हो ।

एक बात तो स्पष्ट हो गई है कि अटल जी के बाद की नई भाजपा ने नई राह पकड़ कर साठ वर्षो से चला आ रहा अन्तर्द्वन्द समाप्त कर दिया है और अन्तर्द्वन्द समाप्ति के साथ ही राजनैतिक दलो में आन्तरिक लोकतंत्र का अन्तिम टिमटिमाता दीपक भी बुझ गया है । अब जेडीयू से तो कोई उम्मीद है ही नहीं कि वह लंबे समय तक मसाल जलाकर रख सकेगा । भाजपा में लोकतंत्र की समाप्ति के बाद अब कोई इतने खतरे उठाकर इस मसाल को जीवित नही रख सकता। इसलिये अटल युग की समाप्ति के साथ ही स्वीकार कर लेना चाहिये कि भाजपा जो साठ वर्षो से किसी भी कीमत पर लोकतंत्र को मजबूत करने का झंडा झुकने नही दे रही थी वह भाजपा हार गई है और अब भाजपा धीरे धीरे तानाशाही के पक्ष में चलना शुरू कर देगी, जो हो सकता है कि उसे सत्ता में ला दे, यह संभव है कि देश शक्तिशाली हो किन्तु लोकतंत्र कमजोर होगा, समाज गुलाम होगा इतना निश्चित है ।

प्रश्न उठता है कि ऐसी विकट स्थिति में समाज क्या करे ? लोकतंत्र व्यवस्था देने में असफल है। तानाशाही से ही व्यवस्था स्थापित हो सकती है सभी आंतरिक लोकतंत्र को समाप्त करके तानाशाही की राह पर चल पड़े है। अब क्या हो ? मेरे विचार में स्थिति अभी बिल्कुल स्पष्ट नही है । कांग्रेस पार्टी में सोनिया जी तानाशाह होते हुये भी विकेन्द्रीयकरण के संदेश दे रही है। भाजपा में तानाशाही घोषित न होते हुये भी केन्द्रीयकरण के संदेश मिलने लगे है और तीसरी राह है नही । इसलिये जब तक कोई स्पष्ट राह न बने तब तक सोनिया मनमोहन जोड़ी पर विश्वास करने या कोई तीसरी राह चुनने के ही विकल्प हमे दिख रहे है। शायद भविष्य में कुछ नई स्थिति बने तो बात और है।

कार्यालयीन प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न :– आप रामदेव जी के साथ लम्बे समय तक जुड़े रहे है। अब रामदेव जी ने विधिवत् राजनैतिक दल की घोषणा कर दी है। अब भविष्य में इस दल में आपकी भूमिका क्या होगी ?

उत्तर :– मैने सन् चौरासी में ही दलीय राजनीति पूरी तरह छोड़ दी थी । उसके बाद दलीय राजनीति से मेरा कोई संबंध कभी नही रहा । रामदेव जी एक बहुत शरीफ व्यक्ति रहे इसलिये मैं उनका प्रशंसक रहा । किन्तु करीब तीन वर्ष पूर्व ही मुझे रामदेव जी के अन्दर राजनैतिक

महत्वाकांक्षा की दुर्गन्ध महसूस होने लगी थी । प्रमाण कुछ था नहीं किन्तु फिर भी मैने उनसे धीरे धीरे तटस्थता बनानी शुरू कर दी ।

करीब डेढ़ वर्ष पूर्व उन्होंने शत प्रतिशत मतदान और विदेशी धन भारत लाने का मुद्दा उठाया तो मै आश्वस्त हो गया कि अब उनकी राजनैतिक महत्वाकांक्षा में कोई संदेह नहीं है। इसलिये मैने अपने लेखों में उनका नाम लेकर समीक्षा या आलोचना शुरू कर दी थी। दिल्ली बैठक में पिछले वर्ष रामदेव जी के संबंध में लम्बी चर्चा हुई तब भी मैने स्पष्ट भविष्यवाणी कर दी थी कि रामदेव जी राजनैतिक दल बनाएँगे ही और उनका यह कदम उनके लिये तो आत्मघाती होगा ही किन्तु समाज के लिये भी हानिकारक होगा क्योंकि भारतीय जन मानस को उन पर बहुत भरोसा है। किन्तु न तो मेरे हाथ में कुछ था न मैं उन्हें समझा सकता था इसलिये मैने इस विषय पर सोचना बन्द कर दिया । अब रामदेव जी ने बाकायदा दल बनाने की घोषणा कर दी है और मुझे पूरा विश्वास है कि रामदेव जी ने गलत कदम उठा लिया है।

जबसे मुझे यह अनुभव हुआ कि रामदेव जी राजनीतिक दलदल में फंसेगे तभी से मैंने बिल्कुल अलग मार्ग पर चलना शुरू कर दिया था। आर्य महा सम्मेलन दो हजार छः में मैने जब वानप्रस्थ लिया उस सम्मेलन में वे शामिल थे। उसके बाद मेरा कोई संपर्क भी नही रहा और आवश्यकता भी नही थी । मेरी सोच रही कि राजनीति को एक दावानल समझकर उसमें अपनी ताकत लगाना व्यर्थ है क्योकि हम उसे सुधार तो नही सकते उल्टे अपनी शक्ति का अपव्यय और कर लेंगे । मेरा सुझाव था कि हम समाज में एक दबाव समूह (प्रेशर ग्रुप) तक स्वयं को सभी दलो की समीक्षा आलोचना तक सीमित कर ले किन्तु विरोध और संघर्ष की भूमिका से दूर रहे। हमारा सभी दलों के साथ मित्रता पूर्ण संबंध तो रहे, किन्तु प्रतिवद्धता न बने न दिखे । हमारे कई साथियों को मेरे संदेह पर विश्वास नही था क्योंकि रामदेव जी राजनीति के विरूद्ध जो कुछ बोलते थे उस पर उन्हें विश्वास था। आज मेरी बात सच निकली और उनका विश्वास टूट गया । मुझे तो ऐसा विश्वास है कि आगामी कुछ महिनों में ही उन्हें वास्तविकता का आभास हो जायेगा जब उनके अनेक शुभ चिंतक उनसे दूरी बनाते नजर आयेगे ।

एक काम रामदेव जी ने अच्छा किया कि उन्होंने जल्दी ही दल बनाने की घोषणा कर दी अन्यथा हमारे प्रेशर ग्रुप समर्थक साथी भी दुविधा में रहते । अब मामला पूरी तरह साफ साफ हो गया है। अब कोई भ्रम नहीं रहा । जो लोग वर्तमान राजनैतिक पतन के दावानल को बुझाने की हिम्मत करेंगे वे उसमें कूदेंगे । मै न तो पहले कूदने के पक्ष में था न अब हूँ। मै पहले भी कछुआ की सतर्क चाल से प्रेशर ग्रुप का पक्षधर था और अब भी हूँ।

मै अब तक प्रेशर ग्रुप को जिस तरह समझ पाया हूँ उसके अनुसार हमारे ज्ञान यज्ञ परिवार को इस प्रकार संगठित होना चाहिये कि उसमे किसी भी राजनैतिक दल का व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से शामिल हो सके। यह ग्रुप सभी राजनैतिक दलों की समीक्षा आलोचना प्रशंसा तक सीमित रहे किन्तु किसी भी राजनैतिक दल का न विरोध करे न संघर्ष। ज्ञान यज्ञ परिवार को सभी दलों के समर्थक या सहयोग से भी दूरी बनाकर रखनी चाहिये । यदि मुझे भी इन सीमाओं से कभी उपर जाना हो तो मै भी व्यक्तिगत तौर पर उससे उपर नीचे हो सकता हूँ किन्तु ज्ञान यज्ञ परिवार को उसमे नही समेट सकता । हमारा कोई भी साथी हमारे साथ रहते हुए भी रामदेव जी के पक्ष विपक्ष में सक्रिय हो सकता है। हम उक्त साथी के साथ वार्तालाप में भी रामदेव जी के

राजनैतिक घटनाक्रम की समीक्षा, प्रशंसा, आलोचना तक सीमित रहेंगे । हम अपने साथी को उस दिशा मे रोकेंगे न ही प्रोत्साहित करेंगे क्योंकि ऐसा करना उनका व्यक्तिगत मामला है जिसका विरोध या सर्मथन करना हमारा कार्य नहीं ।

अन्त में मेरा आग्रह है कि हमारे सभी साथियों को नई परिस्थितियों में अपनी भूमिका पर गंभीर विचार करना चाहिये ।

उत्तरार्ध

हमारे मार्गदर्शक बजरंग मुनि जी ने रामानुजगंज सरगुजा छत्तीसगढ़, जो इनका गृह नगर भी है, सात दिनो की ज्ञान कथा की । यह उनकी सात दिनों की पहली ज्ञान कथा थी । तीन मार्च से नौ मार्च तक चली ज्ञान कथा का आयोजन रामानुजगंज ज्ञान यज्ञ परिवार ने किया था । सात दिवसीय आयोजन में पहले दिन प्रातः यज्ञ संपन्न हुआ आयोजकों की व्यवस्था अनुसार यज्ञ वैदिक विधि से संपन्न हुआ जो बीस मिनट चला। यज्ञ पश्चात् मुनि जी की संक्षिप्त वार्ता के बाद ध्वाजारोहण तथा ध्वज प्रार्थना हुई तथा ध्वज वंदन के बाद प्रसाद वितरण हुआ। शाम पांच बजे से ज्ञान कथा शुरू हुई। गीत और स्वागत गान पश्चात् श्री रामसेवक गुप्त ने मुनि जी के परिचय में बताया कि उन्होंने किस प्रकार विचार मंथन द्वारा विश्वस्तरीय विषयों पर गंभीर निष्कर्ष दिये । पहले जब वे बताते थे तो रामानुजगंज के लोग उनकी बात को समझते बिल्कुल नहीं थे किन्तु उन पर इतना विश्वास था कि उनकी बात मान लेते थे। अब दिल्ली से वापसी के बाद यहॉ के लोगों ने भी जब समझना शुरू किया तब उन्हें उनकी विलक्षण प्रतिभा का अनुभव हुआ। उन्हें विश्वास है कि विश्व की सभी समस्याओं का समाधान इसी मार्ग से संभव है।

पहले दिन का विषय था ज्ञान कथा क्यों ? क्या और कैसे ? इस विषय पर मुनि जी ने ज्ञान और शिक्षा का फर्क, ज्ञान यज्ञ और ज्ञान कथा का फर्क, ज्ञान यज्ञ किन परिस्थितियों में तथा वर्तमान समय की विश्व की परिस्थितियों से उन परिस्थितियों की तुलना, प्राचीन समय में ज्ञान यज्ञ का स्वरूप, ज्ञान यज्ञ की अन्य यज्ञों से विशेष स्थिति आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला । मुनि जी ने उदाहरण देकर बताया कि ज्ञान यज्ञ विशेष परिस्थिति मे विशेष विधि से किया जाता है। इस यज्ञ का विशेष प्रभाव भी होता है। रामायण काल में विश्वामित्र ने यह यज्ञ किया और महाभारत काल में कृष्ण ने भी यह यज्ञ किया और इसकी महत्ता का वर्णन भी गीता मे किया किन्तु बाद मे परिस्थितियॉ बदली और ज्ञान यज्ञ विधि का ज्ञान लुप्त हो गया । अब विश्व की सामाजिक परिस्थिति पुनः ज्ञान यज्ञ की आवश्यकता प्रतिपादित कर रही है।

इस संबंध मे मुनि जी से कई प्रश्न भी पूछे गये। कई प्रश्नों के उत्तर के बाद समय पूरा होते ही चर्चा प्रातः काल के लिये स्थगित हो गई । दूसरे दिन प्रातः यज्ञ पश्चात् मुनि जी ने पहले दिन के विषय को ही आगे बढ़ाते हुये अनेक प्रश्नों के उत्तर दिये ।

दूसरे दिन अर्थात् चार मार्च को ज्ञान यज्ञ कथा का विषय था धर्म, समाज, संस्कृति। प्रारंभ में विमलेश सिन्हा जी ने मुनि जी का परिचय कराते हुए बताया कि मुनि जी अपने जीवन काल में गंभीर विचारक के साथ साथ संघर्ष शील भी रहे है। आपने कई बार जान की परवाह न करते हुए अपराधियों का मुकाबला किया जो एक विलक्षण गुण होता है अन्यथा गंभीर

विचारक संघर्ष नहीं कर पाते। कई बार तो इनकी हत्या की सुपारिया तक दी गई। रामानुजगंज के लोग सभी घटनाओं के प्रत्यक्ष दर्शी होने से मै ज्यादा समय न लेकर मुनि जी को आमंत्रित करता हूॅं। माल्यार्पण तथा स्वागत पश्चात् मुनि जी ने धर्म, संप्रदाय, संस्कृति और राज्य की अलग अलग व्याख्या की । उन्होंने धर्म और उपासना को भी बिल्कुल पृथक पृथक बताया । मुनि जी ने हिन्दू संस्कृति और भारतीय संस्कृति को भी बिल्कुल अलग अलग सिद्ध किया । उन्होंने धर्म, समाज और राज्य को इतना अलग अलग परिभाषित किया कि श्रोता मंत्र मुग्ध हो गये। उन्होंने इस्लाम और साम्यवाद के आचरण को धर्म विरोधी बताया तथा संघ के विषय में भी बताया कि सन् उन्चास के पूर्व संघ हिन्दुत्व के सहारे के लिये राजनीति करता था किन्तु अब राजनीति के लिये हिन्दुत्व का सहारा लेता है। उनके कथन पर कुछ मुस्लिम विद्वानों ने भी प्रश्न किये तथा कार्यकर्त्ताओं ने भी जिसका मुनि जी ने संतोषप्रद उत्तर दिया ।

तीसरे दिन प्रातः भी धर्म सम्प्रदाय संस्कृति विषय पर ही चर्चा हुई तथा प्रश्नोत्तर हुए। प्रसाद वितरण पश्चात् यह सत्र समाप्त हुआ।

तीसरे दिन शाम मुनि जी का परिचय श्री प्रमोद केशरी जी ने कराया। उन्होने बताया कि मुनि जी जीवन भर संघर्ष शील तो रहे किन्तु मैनें जीवन में कभी आवेश में आते नहीं देखा । कड़ी से कड़ी आलोचना का भी सामान्य ढंग से उत्तर देना इनका विलक्षण गुण रहा है। आम तौर पर व्यक्ति या तो आवेश में आ जाता है या कायरों के समान सुन लेता है। किन्तु मुनि जी में दोनों का अजीब संतुलन था कि न कभी आवेश में आना, न कभी दबना । सच बात यह है कि बिरले लोगों मे ही यह गुण देखने को मिलता है।

माल्यार्पण पश्चात् मुनि जी ने तीसरे दिन की आर्थिक विषयों पर कथा की। मुनि जी ने बताया कि भारत की कोई भी आर्थिक समस्या न समाज निर्मित है न धर्म निर्मित। राज्य जानबूझकर ऐसी आर्थिक समस्याओं का विस्तार करता रहता है। कृत्रिम उर्जा श्रम की प्रतिस्पर्धी होती है और बुद्धिजीवियों की सहयोगी। पश्चिम के लोकतंत्र पर पूंजीपतियों का वर्चस्व होता है और साम्यवाद समाजवाद पर वुद्धिजीवियों का । दोनो ही येन केन प्रकारेण कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि को रोक कर रखना चाहते है।

मुनि जी ने सभी आर्थिक समस्याओं के एक समाधान का सुलभ मार्ग भी बताया कि भारत की अर्थनीति में एक मामूली परिवर्तन भारत का विदेशी कर्ज बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, श्रम शोषण, शहरी आबादी वृद्धि, पर्यावरण प्रदूषण वृद्धि, उत्पादन में कमी आदि सभी समस्याओं में कमी कर सकता है। मुनि जी ने रहस्योदघाटन किया कि खाड़ी देशों से भारतीय राजनेताओं की आन्तरिक साठ गांठ हमारी सभी आर्थिक समस्याओं का मूल कारण है। मुनि जी ने अपनी आज की कथा में स्वतंत्र अर्थपालिका की भी चर्चा की और बताया कि भारत सरकार चाहे स्वतंत्र अर्थपालिका शुरू करे या न करे किन्तु ज्ञान यज्ञ परिवार तो अपनी आन्तरिक व्यवस्था में स्वतंत्र अर्थ पालिका योजना को लागू करेगा ।

चौथे दिन अर्थात् छः मार्च को प्रातः यज्ञ पश्चात् कल के शेष विषय की चर्चा हुई तथा प्रश्नोत्तर भी हुए । प्रश्नोत्तर में श्रोताओं ने स्वतंत्र अर्थपालिका संबंधी प्रश्न पूछे जिसका मुनि जी ने और विस्तृत विवरण बताया ।

शाम की कथा का विषय था अपराध नियंत्रण । प्रारंभ मे श्री अशोक जायसवाल ने मुनि जी का परिचय कराते हुए बताया कि जब तक मुनि जी रामानुजगंज में रहे तब तक यहॉ के लोग स्वयं को सुरक्षित महसूस करते थे । पता नहीं कि इनके पास कौन सी जादू की छड़ी थी कि रामानुजगंज के आस पास तक की कैसी भी चोरी डकैती का ये बहुत आसानी से पता लगाकर पकड़ लेते थे । यहॉ तक कि भूत प्रेत के मामले भी कई बार इनके समक्ष आ जाते थे और राहत पाकर लौटते थे । इनके सामने कैसा भी अपराधी झूठ नही बोल पाता था। मुनि जी ऐसी प्रतिभा के धनी थे कि ये स्वयं नाटक भी लिखते थे और नाटक में पार्ट भी कर लेते थे । ''घेरा टूटेगा'' इनका प्रसिद्ध नाटक था जो सरगुजा जिले के बाहर भी कई जगह दिखाया गया था।

माल्यार्पण पश्चात् मुनि जी ने अपराध नियंत्रण पर अपनी कथा शुरू की। उन्होंने अपराध, गैर कानूनी तथा अनैतिक का अन्तर उदाहरण देते हुए समझाया। मुनि जी ने तीन प्रकार के अपराध '' (1) मौलिक (2) संवैधानिक (3) सामाजिक'' की भी विस्तृत व्याख्या की । मुनि जी ने एक नम्बर, दो नम्बर, तीन नम्बर को विस्तार में समझाते हुए कहा कि यदि आप लोग भी एक नम्बर, दो नम्बर, तीन नम्बर की थ्योरी की ठीक से समझ ले तो आपके आस पास के अपराध आप भी आसानी से पकड़ सकते है। सारा खेल तो अपराध की विकृत परिभाषा मे ही छिपा है। अपराधियों और राजनेताओं ने मिलकर आपको अपराध शब्द की विकृत परिभाषा दी है और आप उसे जीवन भर ढ़ो रहे है। मैने अपराध शब्द को अपनी परिभाषा में संशोधित किया तब मुझे मछली की आंख सरीखे अपराधी और अपराध साफ साफ दिखने लगे । मैने भूत प्रेत की भी नई परिभाषा समझी और मैं उसमे पूरा सफल रहा ।

मुनि जी ने बताया कि अपराध नियंत्रण बिल्कुल साधारण कार्य है। यदि राज्य न करे तब भी अपराध समाज रोक सकता है यदि राज्य बाधा न पैदा करे । भ्रष्टाचार का रूकना तो और भी आसान काम है क्योकि निन्यान्नवें प्रतिशत भ्रष्टाचार तो दो नम्बर में आता है। एक दो प्रतिशत भ्रष्टाचार ही अपराध की श्रेणी में होता है जिसे रोकने में दिक्कत नहीं । मुनि जी ने कहा कि संपूर्ण भारत में नक्सलवाद की रोकथाम में पहली सफलता रामानुजगंज को ही मिल पाई क्योकि यहॉ नक्सलवाद का रूकना सामाजिक आवश्यकता थी और अन्य जगहों पर सरकारी। यदि यहॉ के लोग भी मात्र सरकार के भरोसे रहते तो नक्सलवाद रूकता ही नहीं । मुनि जी ने याद दिलाया कि चौदह वर्ष पूर्व किस प्रकार मध्यप्रदेश की दिग्विजय सिंह सरकार ने रामानुजगंज शहर की प्रतिरक्षा प्रणाली को ध्वस्त करने की मूर्खता की थी जिसके परिणाम स्वरूप छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद का प्रवेश हुआ था। सब कुछ यहॉ की जनता ने अपनी छाती पर झेला है तब आज छाती फुलाकर समाज के समक्ष अपनी बात रख रहे है। मुनि जी से अनेक अधिवक्ताओं ने इस विषय पर प्रश्न किये। विशेषकर दो नम्बर तीन नम्बर पर । समय अधिक होने के कारण शेष प्रश्नो का उत्तर दूसरे दिन यज्ञ पश्चात दिया गया । दूसरे दिन प्रातः काल भी विस्तृत चर्चा हुई । कुछ नागरिकों ने मुनि जी से निवेदन किया कि आप रामानुजगंज मे ही रहें जिससे हम निर्भय होकर रह सकें। मुनि जी ने बताया कि यदि पचपन वर्षो की सक्रियता के बाद भी आप बालिग नही हुए तो अब मेरे शेष थोडे से जीवन से ही क्या मिल जायगा ? अब मै आपकी सुरक्षा नहीं करना चाहता बल्कि ज्ञान यज्ञ के माध्यम से वह मंत्र ही सिखा दे रहा हूॅ जो मेरी ताकत रही है । आप स्वयं उस मंत्र का उपयोग करो और सुरक्षित रहो ।

शाम की कथा का विषय था लोक स्वराज्य । आज मुनि जी का परिचय उस क्षेत्र मे स्वराज्य बाबा नाम से विख्यात श्री केशव चौबे जी ने कराया । उन्होने कहा कि मुनि जी एक ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व है जिनकी धर्मशास्त्र ,समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, आदि पर समान पकड़ है। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि इन विषयो पर इनका अध्ययन ज्यादा नही है क्योकि अध्ययन प्रायः मौलिक नही होता । मुनि जी का चिन्तन उनके निष्कर्षो का आधार रहा है। कोई व्यक्ति खेतो मे परिश्रम करके जंगल में इतने गहन विषयों पर एक साथ चिन्तन करे ऐसा तो कोई उदाहरण वर्तमान में नहीं मिलता। सौभाग्य से ऐसा उदाहरण हमारे ही बीच मे मौजूद है । स्वराज्य बाबा ने कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि आज का विषय भी लोक स्वराज्य ही है।

स्वागत और स्वागत गीत के पश्चात मुनि जी ने स्वराज्य सुराज्य का अन्तर स्पष्ट किया । उन्होने राष्ट्रीय स्वराज्य और सामाजिक स्वराज्य का भी अन्तर बताया । उन्होने कहा कि गांधी हत्या के दिन ही भारत के सामाजिक स्वराज्य पर ताला बन्द कर दिया गया और सुराज्य के मीठे सपनों में सुला दिया गया। जब तक स्वराज्य नही होगा तब तक सुराज्य हो ही नहीं सकता। मुनि जी ने नेहरू अम्बेडकर पटेल आदि के गांधी के विरूद्ध गुपचुप योजना की भी चर्चा की और बताया कि गांधी पिण्ड छूटते ही नेहरू जी ने विनोबा ही की जबान पर ताला लगा दिया। अब विनोबा जी घूम घूम कर ग्राम स्वाराज्य की एक नेहरूवादी सरकारी परिभाषा समझातें रहे और इस सर्वोदय परिभाषा ने लोक स्वराज्य की भूख ही मिटा दी । आज भी हमारे गांधीवादी सर्वोदयी उसी नकली परिभाषा को ढ़ो रहे हैं। मुनि जी ने स्पष्ट किया कि भारत की सभी समस्याओ का समाधान ग्राम सभा सशक्तिकरण मात्र ही है जो काम रामानुजगंज विकास खंड से शुरू हुआ है । हमारे स्थानीय मंत्री रामविचार जी की इच्छानुसार यह कार्य बलरामपुर विकास खंड में भी बढ़ाया जा रहा है । मुनि जी ने कहा कि हमारे गांधी वादी ग्रम स्वराज्य के नाम पर सुराज्य परोस रहे हैं और छत्तीसगढ़ सरकार सुराज के नाम पर ग्राम स्वराज्य को प्रोत्साहित कर रही है । इन दोनो के बीच क्या गड़बड़ झाला है यह मै नही समझ पाया ।

छठे दिन अर्थात आठ मार्च को प्रातः यज्ञ पश्चात लोकस्वराज्य विषय पर और व्यापक चर्चा हुई तथा प्रश्नोत्तर हुए।

छठे दिन शाम का विषय था समाज में महिलाएँ। आज की कथा में मुनि जी का परिचय कराते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता श्री अवधेश गुप्त ने बताया कि मुनि जी अपने जीवन में आर्थिक मामलों मे पूरी तरह ईमानदार रहे। इन्होंने अनेक कष्ट झेले किन्तु कभी नीचे नही उतरे। राजनीति में इतने उँचे उँचे दायित्व संभालने के बाद भी पूरे जीवन में इन पर एक भी कलंक का छींटा नही लगा यह भी एक विलक्षण ही बात है । इनके राजनैतिक विरोधियो तक ने कभी इन पर भ्रष्टाचार शंका नही की । यहां तक कि इनके शत्रु भी इन पर कभी ऐसा लांछन नहीं लगा सके। माल्यार्पण तथा स्वागत पश्चात् इस विषय पर चर्चा करते हुये मुनि जी ने वे कारण बताये जिनके लिये महिलाओं को अलग वर्ग के रूप में स्थापित किया जा रहा है। मुनि जी ने कहा कि स्त्री और पुरूष कभी भी पृथक वर्ग न है न हो सकते है क्योकि वे परिवार व्यवस्था से जुड़े है। इक्के दुक्के लोग ही अपना स्वतंत्र और अकेला अस्तित्व रखते है। अन्यथा ऐसा कोई व्यक्ति नही। जब एक स्त्री और एक पुरूष को मिलकर जीवन भर तीन पैर की दौड़ दौड़नी ही है और किसी भी परिस्थिति में पैर खुल ही नही सकता तो पृथक वर्ग की कल्पना कैसी । मुनि जी ने इस्लामिक

परिवार, हिन्दू परिवार तथा इसाई परिवार व्यवस्था के अन्तर स्पष्ट किये । मुनि जी ने दहेज प्रथा तथा पर्दा प्रथा की प्राचीन स्वरूप की चर्चा की। उन्होंने उन सामाजिक स्थितियों की भी चर्चा की जब सती प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, बहु विवाह, दासी प्रथा आदि का प्रचलन हुआ । मुनि जी ने स्पष्ट किया कि भारत में सती प्रथा रोकने के नाम पर सामाजिक मामलों में सरकारी हस्तक्षेप के आमंत्रण का पहला पाप राजा राम मोहन राय ने किया था अन्यथा उनके पूर्व राज्य सामाजिक समस्याओं में हस्तक्षेप नही करता था इसलिये भारत का हर नेता राजा राम मोहन राय की बहुत प्रशंसा करता है।

मुनि जी ने बताया कि महिला उत्पीड़न शब्द को राजनैतिक हथियार के रूप में उपयोग किया जा रहा है। मुनि जी ने आग और बारूद की तुलना करके बताया कि किस तरह सरकार असहमत महिला पुरूष के बीच तो इस दूरी को घटाकर विध्वंस की स्थितियां पैदा कर रही है तो दूसरी ओर असहमत महिला पुरूष मिलन में कानूनी बाधा पैदा करके अव्यवस्था भी फैला रही है। मुनि जी ने बलात्कार की भी एक संशोधित व्याख्या की और बलात्कार वृद्धि के कई कारण बताये । मुनि जी ने भूख और भोजन प्राप्ति का भी उदाहरण देकर समझाने का प्रयास किया ।

मुनि जी ने गंभीर कटाक्ष करते हुए बताया कि भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में महिलाओं के संबंध में चिन्ता कर रही महिलाओं को कितना पारिवारिक परिवेश का ज्ञान है यह भी सोच का विषय है। अनेक तो राजनेताओं की कृपा पर ही महिला प्रतिनिधि बनती रही है जिनकी धीरे धीरे पोल खोल रही है।

मुनि जी ने बताया कि पुरूष प्रधानता किसी पर किसी का अत्याचार न होकर एक सामाजिक व्यवस्था है जिसमे अधिक योग्य लड़का और कम योग्य लड़की का जोड़ा बनाकर लड़की पति के घर जाती है। महिला आंदोलन चलाने वाली सामाजिक ठेकेदार महिलायें अपने घर से पहल करें कि अधिक योग्य लड़की का विवाह कम योग्य गरीब लड़के से करके लड़के को अपने घर लावे तब पुरूष प्रधानता टूटेगी । अपनी लड़की का विवाह करते समय अलग व्यवस्था और संसद मे बात करते समय अलग । महिला आरक्षण विधेयक का समर्थन गलत है और विरोध करने वालों के तर्क उससे भी ज्यादा गलत है यह बात मुनि जी ने स्पष्ट की । मुनि जी ने बताया कि आज आठ मार्च को महिला सशक्तिकरण के नाम पर विदेश संचालित सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत घूम घूम कर अपरिपक्व बातें बताई जा रही है। वे महिलाये भी यहां उपस्थित है। वे मंच पर आवे और अपना पक्ष रखें तब प्रश्नोतर से कुछ हल मिलेगा, मुनि जी के इस आहवान के बाद भी कोई चर्चा नही हुई ।

सातवे दिन अर्थात नौ मार्च को प्रातः यज्ञ पश्चात् मुनि जी ने महिलाओं संबंधी कुछ और बाते रखी । पति पत्नी के बीच पुरूष का आक्रामक होना प्राकृतिक आवश्यकता है न कि अत्याचार। हिन्दू कोड़ बिल ने समस्याएँ सुलझाई कम और उलझाई ज्यादा ऐसी कई बाते मुनि जी ने बताई । कुछ प्रश्न भी हुये जिनका मुनि जी ने उत्तर दिया ।

श्शाम की कथा का विषय छः दिन की समीक्षा और नई समाज रचना के प्रारूप तक केन्द्रित था । मुनि जी का परिचय नगर पंचायत के निवृतमान अध्यक्ष तथा वरिष्ठ अधिवक्ता राम कृष्ण पटेल ने कराया । उन्होंने बताया कि मुनि जी में एक विलक्षण प्रतिभा भी थी कि वे पूरी

तरह सत्य भी बोलते थे और गंभीर बातो को छिपा भी लेते थे। बिना झूठ बोले सत्य छिपाना कोई आसान काम नहीं होता है किन्तु इनमे था । एक बार तो इनकी लिखी पुस्तक के आधार पर इन पर केस भी चला था । इसी तरह मुनि जी ने उच्च स्वाभिमान भी रहा जो अब तक है । मुनि जी की एक विशेषता और रही कि वे शत्रु और मित्र की अच्छी पहचान रखते थे और इनके साथ व्यवहार की सीमाऍ भी बनाकर रखते थे। मुनि जी मे एक खास विशेषता भी थी कि वे तात्कालिक घटनाओं की समीक्षा करके दूर तक की भविष्यवाणी कर दिया करते थे । इनकी अनेक राजनैतिक भविष्यवाणियॉ तो प्रसिद्ध हो चुकी हैं। इन्होने विश्व घटना कम पर कई समयवद्ध भविष्यवाणियॉ भी की हैं जो ज्ञान तत्व मे प्रकाशित हुई और बाद मे सच हुई।

मुनि जी ने आज की कथा में स्वागत उपरांत बताया कि उन्होने छः दिनो की छ कथाओ मे विश्व की प्रमुख समस्याओ के समाज पर पड रहे प्रभावो की भी व्याख्या की और भारत की प्रमुख समस्याओं की भी । भारत की प्रमुख समस्याओं के निम्न समाधान हो सकते हैं

(1) लोक स्वराज्य (2) अपराध नियंत्रण को सर्वोच्च प्राथमिकता (3) आर्थिक असमानता नियंत्रण (4) श्रम सम्मान विस्तार (5) वर्ग विद्वेष समाप्ति । उपरोक्त पांच समाधानों के लिये निम्न उपाय हो सकते है (1) संविधान संशोधन द्वारा संविधान मे परिवार, गांव, जिले के अधिकारों की सूची श्शामिल करना तथा राइट टू रिकाल का प्रावधान करना । (2) पांच समस्या निवारण मे श्शासन को अधिक सकिय होना तथा छ की सक्रियता कम कर देना (3) कृत्रिम उर्जा का मूल्य दो गुना करके प्राप्त सारा धन प्रत्येक व्यक्ति मे समान रूप से वितरित कर देना (4) स्वतंत्र अर्थपालिका का निर्माण (5) समान नागरिक संहिता लागू करना । इन समस्याओ के समाधान के लिये हम श्शासन से मांग कर सकते हैं।

विश्व स्तरीय समस्याओं के समाधान के लिये तो हम अभी कुछ भी सामूहिक करने की स्थिति में नहीं हैं। क्योकि हमारी भारत की समस्याऍ ही इतनी है कि हम अभी क्या करें ? फिर भी हम इतना तो कर ही सकते हैं कि हम स्वयं को इन विश्व समस्याओं के प्रभाव से दूर रख सके क्योकि ये विश्व स्तरीय समस्याऍ पूरे विश्व को प्रभावित कर रही हैं जिनमें हमारा परिवार हमारा गांव श्शहर भी श्शामिल हैं।

इन सभी समस्याओं का तात्कालिक समाधान यही संभव है कि हम मानसिक व्यायाम द्वारा अपनी स्वयं की बौद्धिक क्षमता बढाने का प्रयास करें । साथ ही हम मिल जुल कर एक ऐसा प्रेशर ग्रुप बनावे जो राजनीति पर अंकुश के रूप में सामने आवे।

ज्ञान यज्ञ परिवार ने भी इस दिशा मे पहल की है । परिवार अपने प्रत्येक सदस्य को ज्ञान यज्ञ की प्रेरणा देता है । इससे उसका स्वयं का बौद्धिक स्तर बढ़ेगा तथा वह जीवन में न तो आसानी से ठगा जायगा न ही कभी निराश ही होगा । ज्ञान यज्ञ परिवार से जुड़ा सदस्य कभी आत्म हत्या नहीं करेगा यह गारंटी है । दूसरा काम यह करना है कि ज्ञान यज्ञ परिवार के माध्यम से स्थानीय स्तर पर एक संगठन के रूप मे स्थापित हो। मुनि जी ने अन्त मे उपस्थित लोगो से ज्ञान यज्ञ परिवार का सदस्य बनने की अपील की , उसके नियम और कार्यक्रम बताये तथा उसके परिणाम बताये।

समापन सत्र मे श्री अशोक जैसवाल, श्री अजय सोनी, श्री सनाउल्लाह अन्सारी, श्री तिवारी गुरूजी आदि ने भी विचार रखे । कथा के आयोजकों की ओर से श्री अरविन्द सिन्हा ने धन्यवाद दिया।

इस सात दिनो की कथा में श्री विमल साव जी ने इक्यावन हजार रूपया दान दिया जो कोषाध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल को सौप दिया गया । श्री अवधेश गुप्त अधिवक्ता की टीम ने प्रतिदिन स्वागत गान तथा कुछ अन्य गीत सुनाए जो बहुत प्रेंरक थे । कथा की सात दिनों की व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी । उपस्थिति भी प्रतिदिन बढती जा रही थी । उपस्थिति की वृद्धि देखकर कुछ साथियो ने निवेदन किया कि कथा को तीन दिन और बढा दिया जावें। मुनि जी ने घोषणा की कि वे रामानुजगंज में दिसम्बर अठारह से चौबीस तक की सात दिवसीय कथा का पुनः आयोजन रखेंगें जो पचीस दिसम्बर के ग्रम सभा सशक्तिकरण सम्मेलन के रूप में समाप्त होगा। इस कथा तथा सम्मेलन में देश भर के विद्वान जुटेगें । मुनि जी के धन्यवाद के बाद आयोजन समाप्त घोषित हुआ।

कथा के समाचार अनेक अखबारों में छपे । कुछ का विवरण इस प्रकार हैः

हिन्दू संस्कृति की अलग पहचान

बजरंग मुनि जी ने कथा के दूसरे दिन धर्म और सम्प्रदाय और संस्कृति विषय पर बोलते हुए कहा कि आज न हिन्दुत्व खतरे में है न इस्लाम या इसाइयत। आज वास्तविक खतरा तो धर्म के समक्ष है क्योकि आज तो पूरी पूरी मानवता और शराफत ही खतरे में आ गई है।

उन्होंने हिन्दू संस्कृति की प्रशंसा करते हुए कहा कि पूरी दुनिया में हिन्दू संस्कृति की अलग पहचान बनी है कि वह नुकसान सह सकती है किन्तु कर नही सकती, गुलामी सह सकती है किन्तु बना नही सकती या घृणा कर सकती है किन्तु आक्रमण नही कर सकती । हिन्दू संस्कृति द्वारा धर्म परिवर्तन के मामले में एकपक्षीय घोषणा उनकी मूर्खता तो कही जा सकती है किन्तु धूर्तता नहीं । हिन्दुओं की शशराफत या कमजोरी का लाभ उठाकर अपनी संख्या बढ़ाने का प्रयत्न करने वालों को सोचना चाहिए कि यह हिन्दू एकपक्षीय घोषणा हिन्दुओं के लिये गर्व का विषय तो है किन्तु शशर्म का नहीं ।

उन्होंने हिन्दू संस्कृति और वर्तमान भारतीय संस्कृति की तुलना करते हुए बताया कि आज भारतीय संस्कृति की दो पहचान बन गई है कि कम से कम प्रयत्न में अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना तथा कमजोर को दबाना और मजबूत से दबना। वर्तमान भारतीय संस्कृति का जिस तरह विस्तार हो रहा है वह संपूर्ण समाज के लिये कलंक है।

मुनि जी ने साम्प्रदायिकता पर कटु प्रहार करते हुए कट्टरवादी हिन्दुत्व की कटु आलोचना करते हुए कहा कि यदि भारत के सभी मुसलमानों और इसाईयों को भारत से बाहर भी कर दे तो चोरी, डकैती, बलात्कार, जातीय टकराव, आर्थिक असमानता आदि कौन सी समस्या हल हो जायेगी ? यदि इससे किसी भी मौलिक समस्या का हल नही तो हम साम्प्रदायिकता के साथ साथ अन्य समस्याओं को भी जोड़कर समाधान क्यो न सोचे। उन्होंने चुनौती देकर कहा कि कुछ संगठन धर्म के नाम पर राजनैतिक दुकानदारी चलाना चाहते है जो आज की सबसे बड़ी समस्या

है। जब आतंकवाद भ्रष्टाचार और गुण्डागर्दी जैसी भयंकर समस्याओं से हमारा इलाका जूझ रहा है तो हिन्दू मुसलमान की चर्चा को रोकने की जरूरत है।

मुनि जी ने बताया कि साम्प्रदायिक हिन्दुओं का प्रभाव समाज में बहुत कम होते हुये भी धीरे धीरे इसलिये बढ़ रहा कि मुसलमानों की ओर से पहल नहीं हो रही। आम हिन्दू अपने पड़ोस में मुसलमान को बसाने से डरता है क्योकि उसे भय है कि मुसलमान परिवार अपने नौजवान लड़के को हिन्दू लड़की के मामले मे उस तरह निरूत्साहित नही करता जिस तरह से हिन्दू। यह विश्वास मुसलमानों को कायम करना ही चाहिये । धर्म के नाम पर बनाये गये अलग कोड जिस पर हिन्दू विरोध करे तो मुसलमान को साथ देना चाहिये या धर्म परिवर्तन पर रोक का कोई विरोध नही करना चाहिये। दूसरी ओर राजनीतिक रोटी सेकने के नाम पर मुसलमानों को दिन रात गाली देने की प्रवृति को भी हिन्दू लोग रोकने का प्रयास करें। दशहरे के समय दंगा भड़काने की कोशिश को जिस तरह रामानुजगंज की जनता ने एकजुट होकर विफल किया उसके लिये मुनि जी ने शान्ति प्रिय नागरिकों को धन्यवाद दिया।

मुनि जी ने अंत में निवेदन किया कि साम्प्रदायिकता का सबसे अच्छा समाधान है समान नागरिक संहिता । मुनि जी ने स्पष्ट किया कि समान आचार संहिता को लागू करना बहुत घातक होगा। मुनि जी ने समान आचार संहिता और समान नागरिक संहिता को अलग अलग विस्तार से समझाते हुए समान नागरिक संहिता का समर्थन किया ।

समापन के पूर्व रामानुजगंज के युवा वकील सनाउल्लाह अंसारी ने स्पष्ट किया कि मुनि जी का यह कथन अत्यंत गलत है कि हजरत मुहम्मद ने इस्लाम फैलाने के लिये तलवार के उपयोग की अनुमति दी या जनसंख्या बढ़ाने के लिये मुसलमानों को चार शादियों की छूट दी। उन्होंने जोर दे कर कहा कि आतंकवादी लोग वास्तविक मुसलमान न होकर इस्लाम के लिये कलंक है। आम हिन्दुओं को ऐसे दुष्प्रचार से बचना चाहिए। सभा का संचालन कर रहे प्रमोद केशरी ने मुनि जी के विषय में कुछ घटनाओं द्वारा यह सिद्व करने का प्रयास किया कि मुनि जी एक विचारक तो है ही साथ ही अपने जीवन में अनेक ऐसे संघर्ष किये है जिनमे कई बार तो इनकी जान भी जा सकती थी। ऐसे घातक समय में भी मुनि जी पीछे न हटकर मुकाबला किये । ऐसा साहस अन्य लोगों में आम तौर पर देखने को नहीं मिलता ।

डीजल पेट्रोल मूल्य वृद्धि विरोध श्रम शोषण का षंड्यंत्र है

रामानुजगंज में आयोजित ज्ञान कथा के तीसरे दिन कथाकार बजरंग मुनि जी ने श्रोताओं को चौकाते हुये स्पष्ट किया कि भारत की संपूर्ण अर्थ व्यवस्था गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी, किसान के शोषण के उद्देश्य से अमीर शहरी बुद्धिजीवियों का सुनियोजित षड्यंत्र है। उन्होंने उदाहरण देते हुये बताया कि कृत्रिम उर्जा श्रम की प्रतिस्पर्धी तथा बुद्धिजीवियों की सहायक हुआ करती है। भारत में जब भी कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि होती है तो संसद से सड़क तक बहुत हल्ला होता है किन्तु साइकिल पर टैक्स बढ़ता है तो सब चुप हो जाते है विदित हो कि भारत मे प्रति साइकिल तीन सौ रूपया टैक्स लिया जाता है और रसोई गैस को छूट मिलती है। बुद्धिजीवियों पूंजीपतियों की समर्थक सरकार साइकिल पर तो और भी टैक्स बढ़ा सकती है किन्तु रसोई गैस की सब्सीडी कम करने की उसमें हिम्मत ही नहीं है। सब जानते है कि वामपंथी खाड़ी

देशों के वकील हैं। वे जान दे देंगे किन्तु डीजल पेट्रोल का मूल्य नहीं बढ़ाने देंगे यहां तक कि यदि भारत बिजली उत्पादन की भी घरेलू कोशिश करे तो ये किसी भी सीमा तक विरोध करेंगे ही। अन्य राजनैतिक दल सत्तारूढ़ दल की बढ़ती लोकप्रियता के विरूद्ध एकजुट है। मुनि जी ने जोर देकर कहा कि भारत की सभी आर्थिक समस्याओं का एक मात्र कारण कृत्रिम उर्जा मूल्य नियंत्रण ही है जो श्रम मूल्य वृद्धि को बढ़ने से रोक रहा है।

मंहगाई के संबंध में चर्चा करते हुए मुनि जी ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद भारत में सोना, चांदी, जमीन और सरकारी वेतन मंहगा हुआ तथा अन्य सब चीजे सस्ती हुई है। उन्होंने आंकड़े देकर बताया कि मुद्रा स्फीति और मंहगाई कैसे भिन्न है। उनके अनुसार यदि कृषि उत्पादन को सस्ता करने की भूल नहीं होती तो आज कृषि उत्पादन घटता ही नही । सन सतहत्तर में जब भाजपा समर्थित सरकार थी तब शक्कर ढ़ाई रूपया किलो और सरसों तेल चार रूपया किलो था। मै भी उस समय भारत सरकार का भाग था और सस्ती पर गर्व करता था। किसानों ने उत्पादन घटा दिया। किसान आत्महत्या तक करने लगा किन्तु फिर भी मूल्य वृद्धि का हल्ला करने वालों को दया नही आई । अब यदि अभाव हो रहा है तो दोष किसका ? छत्तीसगढ़ की सरकार तक ने अनाज, गुड़, तेल, दाल आदि पर मनमाना टैक्स वसूलने में कभी संकोच नहीं किया । अब साइकिल यात्रा का ढ़ोंग करने से किसान को क्या संदेश देंगे । किसान के अपने गन्ने के गुड़ बनाने तक पर प्रतिबंध क्या कभी अमानवीय दिखा ?

मुनि जी ने बताया कि आर्थिक असमानता बढ़ती जा रही है, श्रम की मांग घट रही है और शिक्षा का महत्व बढ़ रहा है । शिक्षा पर बजट बढ़ाने की मांग रोज उठती है किन्तु गरीब ग्रामीण श्रमजीवी किसान पर टैक्स हटाने की पहल नहीं हो रही । उन्होंने आकड़े देकर बताया कि एक ग्रामीण किसान सौ रूपया का उत्पादन शहर में बेचता है तो आठ से दस रूपया सरकारी टैक्स काटकर उसे नब्बे रूपया ही प्राप्त होता है। वही किसान या मजदूर नब्बे रूपया लेकर बाजार में सामान खरीदता है तो उसे उस खरीदे गये सामान पर फिर से टैक्स लगता है। यहां तक कि अपनी जमीन पर पैदा लकड़ी पर भी सरकार पचीस प्रतिशत तक कर वसूलने का अमानवीय कार्य करती रहती है तो बेचारा गरीब ग्रामीण श्रमजीवी क्या करें ?

मुनि जी ने सलाह दी कि कृत्रिम उर्जा पर बीस प्रतिशत कर लगाकर पूरा धन बीस करोड़ गरीब ग्रामीण श्रमजीवी किसान में बराबर बराबर बांट दे तो प्रत्येक व्यक्ति को चौदह हजार रूपया प्रतिवर्ष मिल सकता है जो पांच आदमी के परिवार को वार्षिक सत्तर हजार तक संभव है। इस मूल्य वृद्धि से श्रम की मांग बढ़ेगी, विदेशी आयात कम होने से कर्ज घटेगा तथा पर्यावरण प्रदूषण भी कम होगा ।

मनमोहन सोनिया जोड़ी को खाड़ी के देशों को प्रसन्न रखने के उद्देश्य से चल रही अब तक की अर्थनीति पर हिम्मत से नई नीति बनाने की पहल करनी चाहिये । क्योंकि यदि आर्थिक विषमता और श्रम शोषण रोकने की ओर तत्काल ध्यान नहीं दिया गया तो भारत में असंतोष की ज्वाला कभी बुझेगी नहीं । उन्होंने संशोधन करके एक स्वतंत्र अर्थपालिका का निर्माण करने का सुझाव दिया जो लोकतंत्र के तीन स्वतंत्र स्तंभ विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के समकक्ष अर्थपालिका के रूप में कार्य कर सके ।

नक्सलवाद का समाधान न बन्दूक से है न विकास से । समाधान है स्थानीय स्वायत्तता

ज्ञान कथा के चौथे दिन रामानुजगंज में बजरंग मुनि जी ने घोषित किया कि आतंकवाद का समाधान न बन्दूक से संभव है न विकास की गंगा बहाने से । नक्सलवाद का समाधान सिर्फ स्थानीय स्वयत्तता ही संभव है जिसे हम समाज सशक्तिकरण भी कह सकते है जिसका पहला चरण है ग्राम सभा सशक्तिकरण । समाज की पहली इकाई परिवार और दूसरी ग्राम व्यवस्था है। किन्तु इस सामाजिक व्यवस्था को तोड़ने या कमजोर करने के परिणाम स्वरूप ही आज अनैतिकता भी बढ़ती जा रही है और अपराध भी ।

मुनि जी ने बताया कि अपराध नियंत्रण राज्य का दायित्व होता है। जबसे सृष्टि बनी है तबसे न्याय और सुरक्षा के लिये ही राज्य का गठन हुआ था। अन्य कार्य चाहे शिक्षा हो या स्वास्थ्य सब समाज की अन्य इकाइयॉ देखती थी । अब राज्य ने अन्य सभी कार्य अपने पास इकट्टे कर लिये जिससे राज्य के पास दायित्वों की भारी भीड़ एकत्रित हो गई । परिणाम हुआ कि सुरक्षा और न्याय कमजोर होता चला गया । आज स्थिति यह है कि संपूर्ण भारत के बजट का एक प्रतिशत ही पुलिस और न्यायालय पर खर्च होता है। अन्य सारा बजट अन्य सभी कार्यो पर खर्च कर दिया जाता है जिसे विकास कार्य कहते है। दुख की बात यह कि छत्तीसगढ़ मे अपराध बढ़ रहे है, नक्सलवाद प्रमुख समस्या बनी हुई है किन्तु पुलिस विभाग में तीस प्रतिशत पद खाली है और अन्य विभागों में भर्ती करके बेरोजगारी दूर करने की कोशिश हो रही है।

मुनि जी ने बताया कि राजनेताओं ने अपराध शब्द की परिभाषा और पहचान को भी भ्रमपूर्ण बनाकर नई समस्या पैदा कर दी है। वास्तव में व्यक्ति के मूल अधिकारों का उल्लंघन अपराध, संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन गैर कानूनी तथा सामाजिक अधिकारों का उल्लंघन अनैतिक कार्य होता है। हमारे राजनेताओं को भी समाज शास्त्र का ज्ञान न होने से उन्होंने तीन को एक मानकर अपराध घोषित कर दिया। परिणाम हुआ कि अपराधों की वास्तविक पहचान ही खतम हो गई क्योंकि तीनो राज्य द्वारा एक ही लाठी से हांके जाने लगे । समाज में कुल अपराधियों का प्रतिशत दो से भी कम है किन्तु समाज में यह धारणा बन गई है कि समाज का हर आदमी अपराधी है । अब अपने खेत की लकड़ी बिना अनुमति के काटने वाला भी अपराधी है और नक्सलवादी भी । अब वैश्यावृत्ति करने वाला भी अपराधी है और बलात्कार करने वाला भी। इस ना समझी के कारण ही आज पुलिस भी व्यमत स्वंकमक हो गई है और न्यायालय भी । न्याय में विलम्ब होने का यहीं कारण है कि अपराध शब्द को गलत कर दिया गया। कुल मिलाकर पांच कार्य अपराध होते है – (1) चोरी डकैती लूट (2) बलात्कार (3) मिलावट कमतौल (4) जालसाजी धोखाधड़ी (5) हिंसा और आतंक । अन्य सभी कार्य या तो अनैतिक होते है या गैर कानूनी किन्तु अपराध नही हो सकते । किन्तु धूर्तता या मूर्खता वश, ब्लैक, तस्करी, भ्रूण हत्या, बालश्रम, वैश्यावृत्ति, न्यूनतम मजदूरी, जुआ, शराब, गांजा आदि सैकड़ो अनैतिक कार्यो को अपराध की श्रेणी में शामिल कर दिया गया है।

मुनि जी ने बताया कि अब हमें चाहियें कि हम वास्तविक अपराधों को तीन नम्बर की पहचान देकर अन्य सभी कार्यो को दो नम्बर कहना शुरू कर दें तो अपराध की पहचान भी

संभव है और समाधान भी । जब तक आतंकवाद और लकड़ी चोरी की अलग पहचान नहीं होगी तब तक अपराध रोकना संभव नही । उन्होंने स्पष्ट किया कि अपना मनोबल उँचा उठाइये। गर्व से कहना सीखिये कि हम दो नम्बर हैं तीन नम्बर नही । हमारा लोटा लूटकर लेजाने वाले के घर से अपना लोटा चुराकर लाने का कार्य दो नम्बर है तीन नम्बर नही । हम सरकार पर दबाव डालें कि वह दो नम्बर के कार्यो का बोझ कम करके तीन नम्बर को अपनी प्राथमिकता घोषित करे ।

मुनि जी ने यह भी बताया कि छतीसगढ़ सरकार भारत की पहली सरकार है जो नक्सलवाद से बन्दूक के जोर से भी निपटने की तैयारी कर रही है और ग्राम सभा सशक्तिकरण को भी समझने का प्रयास कर रही है। किन्तु ग्राम सभा सशक्तिकरण में उसकी गति धीमी है । यदि उसे और तीव्र करके गांवों को ज्यादा अधिकार दे दें तो सारी समस्याएँ हल करने में सुविधा होगी।

सभा में नगर पंचायत उपाध्यक्ष श्री अशोक जायसवाल ने मुनि जी का विस्तृत परिचय कराया तथा वरिष्ठ अधिवक्ता अवधेश गुप्ता ने अपनी टीम के साथ दो ती गीत सुनाये । अधिवक्ता गण सनाउल्लाह अंसारी, विजय सिंह, विपिन सिंह आदि ने कुछ प्रश्न भी किये । कन्हैया अग्रवाल ने सुझाव दिया कि एक नम्बर भगवान, दो नम्बर इंसान और तीन नम्बर हैवान की पहचान दी जाय। धन्यवाद पश्चात् सभा समाप्त हुई ।

लोकतंत्र का विकल्प लोक स्वराज्य

ज्ञान कथा के पांचवे दिन बजरंग मुनि ने तानाशाही लोकतंत्र और लोक स्वराज्य की चर्चा करते हुए स्पष्ट किया कि साम्यवाद के पतन के बाद अब तानाशाही का खतरा कम हो गया है। पुराने जमाने की तानाशाही का तो अब कोई स्थान ही नहीं रह गया है। साम्यवाद की तानाशाही भी अब नहीं के बराबर रह गई है। इस्लामिक तानाशाही का स्वरूप भी अब नियंत्रण मे है। ऐसी स्थिति में अब लोकतंत्र में भी संशोधन सुधार शुरू करने की आवश्यकता है। पचीस तीस वर्षो के अनुसंधान के बाद लोकस्वराज्य प्रणाली लोकतंत्र के विकल्प के रूप में सामने आई है।

लोकतंत्र और लोकस्वराज्य प्रणाली का अन्तर स्पष्ट करते हुए मुनि जी ने बताया कि लोकतंत्र लोक नियुक्त तंत्र तक सीमित होने के कारण तानाशाही से अच्छा होता है किन्तु समाज को गुलाम बनाकर रखता है। इसमें वोट देकर चुनने के अधिकार के अतिरिक्त सभी अधिकार संसद के पास इकट्ठे हो जाते है जबकि लोक स्वराज्य में संसद से लेकर परिवार तक अधिकार तथा दायित्वों का बंटवारा हो जाता है। लोक स्वराज्य प्रणाली में जीवन पद्धति का विकास होता है जबकि लोकतंत्र में शासन पद्धति का । लोक स्वराज्य को सहभागी लोकतंत्र कह सकते है जबकि लोकतंत्र की पहचान संसदीय लोकतंत्र से होती है।

लोक तंत्र समाज को अनेक आधारों पर तोड़ता रहता है जबकि लोक स्वराज्य जोड़ता है। लोकतंत्र में भ्रष्टाचार पैदा होता है और लोक स्वराज्य में रूकता है। कुल मिलाकर वर्तमान सभी समस्याओं का समाधान लोक स्वराज्य प्रणाली ही है।

मुनि जी ने बताया कि रामानुजगंज शहर की नगरपालिका में लोक स्वराज्य प्रणाली का सफल प्रयोग हुआ है । सन् पच्चानवे से दो हजार तक कांग्रेस पार्टी की व्यवस्था नगर पंचायत

मे चली। दो हजार पांच तक लोकस्वराज्य व्यवस्था चली और उसके बाद भाजपा की चली । आप तुलना करें तो पायेंगे कि लोक स्वराज्य व्यवस्था सबसे ज्यादा सफल रही।

मुनि जी ने स्पष्ट किया कि ग्राम सभा नगर सभा सशक्ति करण, समाज सशक्तिकरण तथा लोक स्वराज्य एक दूसरे से जुड़े हुए है । यदि समाज मजबूत होगा तो लोकस्वराज्य आ जायगा और नगर सभा ग्राम सभा सशक्तिशाली होगी तब भी लोक स्वराज्य आ जायगा । उन्होने बताया कि नक्सलवाद और लोक तंत्र एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । दोनो ही समाज पर शासन करना चाहते हैं । दोनो ही गवर्नमेंट बनने की लडाई लड़ रहे हैऔर लडाई का सारा खर्च हमसे वसूल रहें हैं। दोनो को चाहिये कि दोनो ग्राम सभा को सशक्त करें तो इनकी लडाई स्वयं ही खतम हो जायगी।

श्री जय प्रकाश सोनी गायत्री परिवार के एक प्रश्न के उत्तर मे मुनि जी ने बताया कि गाय और गंगा हिन्दुत्व की पहचान है गुण नहीं। यदि हिन्दुत्व बचेगा तो गाय और गंगा भी बचेगी और मंदिर भी । यदि हिन्दुत्व ही नही बचा तो न गाय बचेगी न गंगा । इसलिये जो लोग गाय गंगा राम मंदिर की लडाई लड रहे है वह गलत है। लडाई समान नागरिक संहिता समाज परिवार सशक्तिकरण के नाम पर होनी चाहिये । संघ परिवार भी समान नागरिक संहिता ,धर्म परिवर्तन पर रोक , हिन्दु कोड बिल विरोध जैसे सामाजिक मुद्दो को छोडकर मंदिर, गाय, गंगा जैसे मुद्धे उठाने की भूल कर रहा है। भूल सुधरनी चाहिये ।

स्वराज्य बाबा उर्फ केशव चौबे जी ने मुनि जी का परिचय कराते हुए एक गंभीर मौलिक चिंतक बताया । उन्होने कहा कि समाज सशक्ति करण का नारा देकर मुनि जी ने सभी समस्याओं के समाधान का मार्ग बताया है । इस अवसर पर विमल साव जी ने ज्ञान यज्ञ परिवार को इक्यावन हजार रूपये का दान दिया जिसकी मुनि जी ने प्रशंसा करते हुए उन्हे धन्यवाद दिया।

महिला आरक्षण समाज का वरदान नहीं अभिशाप है

ज्ञान कथा के छठे दिन समाज मे महिलाओं की स्थिति विषय पर बोलते हुए मुनि जी ने बताया कि आज परिवार व्यवस्था में महिला पुरूष के बीच भेदभाव का एक मात्र कारण पुरुष प्रधान व्यवस्था है । हजारो वर्ष पूर्व समाज मे आरक्षण व्यवस्था शुरू हुई जिसमें ब्राहमण का बेटा पंडित और वैश्य का बेटा व्यापारी बनेगा । इस आरक्षण व्यवस्था के परिणाम स्वरूप योग्यता पिछडी । ऐसी ही आरक्षण व्यवस्था परिवारो मे भी लागू हुई जिसके कारण पुरूष परिवार का स्वाभाविक मुखिया हो गया । इसी के कारण महिलाओं की योग्यता पिछडी । उचित होता कि अब आरक्षण को अभिशाप मानकर समान नागरिक संहिता लागू होती किन्तु राजनेताओ की धूर्तता पूर्ण तिकडमो ने आरक्षण व्यवस्था को मजबूत करना शुरू कर दिया जो समाज को भी तोड़ रही है और परिवार को भी।

मुनि जी ने उदाहरणों से स्पष्ट किया कि आरक्षण व्यवस्था सम्पूर्ण समाज में अधिकार लूट का आधार बन गई है। इसमे पहले सिर्फ सवर्ण जातिया ही शामिल थी किन्तु अब इस लूट मे कुछ अवर्ण भी शामिल हो गये है तथा इस लूट मे अब अनेक सशक्त परिवारो की औरतें भी शामिल हो जायगी । पहले संसद मे पांच सौ बयालीस परिवारो के लोग थे जो सिमट कर चार

सौ तक हो गये है। आरक्षण के बाद अब दो सौ परिवार के लोग ही संसद तक पहुच पायेंगे । मुनि जी ने कहा कि दस वर्षो के सीमित समय के लिये महिलाओं को सौ प्रतिशत आरक्षण दे देना चाहिये अथवा आरक्षण के साथ साथ यह प्रावधान भी हो कि परिवार का एक ही व्यक्ति उस पद पर जा सकता है । इस तरह सशक्त परिवारो तक केन्द्रित होने का खतरा नहीं रहेगा । किन्तु यह बात मानी नही जायगी क्योकि इसमे नेताओं का स्वार्थ गड़बड़ा जाता है।

मुनि जी ने कहा कि महिला और पुरूष विवाह के बाद जीवन भर तीन पैर की दौड दौडने को वाध्य हैं । यही परिवार व्यवस्था है। जब पैर खुलना संभव ही नही तो अपने को आपस मे एडजस्ट करने दीजिये क्योकि अपनी दौड़ मे सफलता का मार्ग उन्हे खोजना है । बाहर वालो का इसमे हस्तक्षेप लाभ कम और हानि अधिक करेगा ।

मुनि जी ने राजनैतिक महिलाओं पर गहरा कटाक्ष करते हुए कहा कि एक मुख्यमंत्री ने ऐसा महिला उत्थान किया कि बडी संख्या मे अपनी महिला यौन साथियों को महिला आयोग जैसे उच्च पद दे दिये । अब ऐसी महिलाएँ राजनीति मे अन्य महिलाओ के चरित्र की सुरक्षा और परिभाषा बनाएँगी । मुनि जी ने बताया कि महिलाओं मे दहेज के नाम पर भी जो असंतोष के बीज बोये जाते हे वे विल्कुल गलत है। दहेज एक सामाजिक व्यवस्था थी जिसकी विकृति दूर हो सकती है किन्तु दहेज स्वयं मे कोई बुराई नही थी।

मुनि जी ने तर्क पूर्ण ढंग से इस तरह अपनी बाते रखी कि श्रोता मंत्र मुग्ध हो गये। उन्होंने स्पष्ट किया कि परिवार व्यवस्था को कमजोर करना अधिक घातक होगा । परिवार सशक्तिकरण होना चाहिये । महिला सशक्तिकरण परिवार व्यवस्था को तोड़ने की राजनेताओं की कुटिल साजिश है। मुनि जी ने हिन्दू कोड बिल की कुछ धाराओं का भी खुला विरोध किया ।

एक खास बात यह थी कि उपस्थित आम श्रोता इस मामले में नई नई व्याख्या सुन सुनकर अचंभित थे। मुनि जी के भाषण में पूरा पूरा मानव विज्ञान भी भरा था और समाज शास्त्र भी । कही धर्मशास्त्र का सहारा नहीं लिया गया । बड़ी संख्या में राजनैतिक हस्तियॉ भी मौजूद थी और पढ़ी लिखी महिलाएँ भी। मुनि जी ने सबको प्रश्न करने की खुली छूट दी । किन्तु ऐसा लगा जैसे कोई प्रश्न की गुंजाइश ही नही है। जिस समय मुनि जी ने बहु विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, सती प्रथा, बाल विवाह, वैश्यावृत्ति आदि विषयों पर बताया तो आम लोगों को पता चला कि किस तरह धर्म के नाम पर समाज गुमराह हुआ और आज राजनीति के नाम पर गुमराह हो रहा है।

अंत में मुनि जी ने सतर्क किया कि पहले समाज को धर्म के नाम पर ठगा गया । अब राजनीति के नाम पर ठगा जायेगा । महिला सशक्तिकरण का नारा राजनेताओं का षड्यंत्र है। धर्म और राजनीति के स्थार्थी ठगों से बचकर समाज शास्त्रीय विवेचना ही समाज को मजबूत कर सकेगी ।

अधिवक्ता अवधेश गुप्ता ने मुनि जी का विस्तृत परिचय कराया और कथा समाप्त हुई ।

परिवार व्यवस्था को मजबूत करें ।

रामानुजगंज में आयोजित ज्ञान कथा के सातवे तथा अन्तिम दिन कथाकार बजरंग मुनि ने छः दिनों की विभिन्न कथाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि परिवार व्यवस्था को मजबूत किया जाना चाहिये। उन्होंने बताया कि परिवार व्यवस्था के साथ साथ गांव को भी एक बड़े परिवार के रूप में अपनी व्यवस्था करनी चाहिये। ग्राम सभा सशक्तिकरण उसका अच्छा आधार बन सकता है। ग्राम सभा एक ऐसी इकाई है जिसे सरकार भी मान्यता देती है और नक्सलवादी भी दें तो समस्याएं सुलझ जायेंगी । हम सब का भी कर्तव्य है कि हम ग्राम सभा को समाज निर्माण की पहली इकाई समझ कर उसे निरंतर मजबूत करते रहे ।

मुनि जी ने बताया कि वर्तमान धार्मिक संगठन भी अनेक बाधाये पैदा कर रहे है। राजनीति से जुडे धार्मिक संगठन तो साम्प्रदायिकता फैला ही रहे है किन्तु चरित्र निर्माण में लगे धर्म गुरू भी अपनी नासमझी के कारण तीन नम्बर की ठीक ठीक पहचान में बाधा पैदा कर रहे है। अब एक नम्बर के चरित्रवान और दो नम्बर के चरित्रहीनो को अपना भेद भूलकर तीन नम्बर अर्थात अपराधियों के विरूद्ध एक जुट हो जाना चाहिये । वर्तमान समय में शराफत संकट में है और शराफत की सुरक्षा कभी शराफत से संभव ही नहीं है। समझदारी यही है कि एक नम्बर दो नम्बर को तीन नम्बर के विरूद्ध मिलकर संघर्ष में लगाया जाय। मुनि जी ने यह भी बताया कि श्रम की मांग इतनी बढ़नी चाहिये कि श्रम का मूल्य स्वाभाविक रूप से बढ़े । इसके लिये डीजल, पेट्रोल, बिजली आदि की भारी मूल्य वृद्धि करके अन्य ग्रामीण गरीब किसान श्रमिक उत्पादनों को पूरी तरह कर मुक्त कर देना चाहिये । यदि धन ज्यादा बचे तो गरीबी रेखा से नीचे वालों को नगद सहायता भी दी जा सकती है। मुनि जी ने यह भी बताया कि धर्म, जाति, भाषा, लिंग आदि समाज को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। किसी प्रकार के आरक्षण भी प्रत्यक्ष रूप से तो लाभ दायक दिखते है किन्तु होते है हानिकारक ही। सारे भेद भाव भूलकर समान नागरिक संहिता पूरे देश में एक साथ लागू कर देनी चाहिये । कानून के समक्ष व्यक्ति एक इकाई हो । अन्य किसी इकाई को कोई मान्यता न हो । अन्य इकाईयों को स्वतंत्रता प्राप्त हो किन्तु अलग से उन्हे विशेष अधिकार न हो । समान नागरिक संहिता और समान आचरण संहिता हो अलग अलग समझ कर समान आचार संहिता पर रोक लगा देनी चाहिये तथा नागरिक संहिता को समान कर दे। मुनि जी ने रामानुजगंज शहर में वार्ड सभा बनाने की ईच्छा जाहिर की । वार्ड सभा ग्राम सभा के समान ही होनी चाहिये जो सशक्त हो । मुनि जी ने बताया कि वर्तमान धर्म और राजनीति पथ भ्रष्ट हो गये है। धर्म का कार्य समाज की सहायता तथा राज्य का काम समाज की सुरक्षा तक सीमित है। किन्तु दोनों ही अपना कर्तव्य भूलकर समाज के मालिक बनने की कोशिश कर रहे है जो घातक है मुनि जी ने कहा कि ग्राम सभा सशक्तिकरण के लिये वे स्वयं पंद्रह मई से तीस मई तक रामचन्द्रपुर विकास खंड तथा बलराम पुर विकास खंड के गांवों का इस प्रकार दौरा करेंगे कि इन गांवों का भ्रष्टाचार शून्य हो जाये । हमारी पहली सफलता यही होगी । वैचारिक दृष्टि से ज्ञान यज्ञ परिवार नाम के संगठन को मजबूत बनाया जायेगा जिसमें बड़ी संख्या में सदस्य साप्ताहिक, मासिक, छःमाही बैठक करके विचार मंथन करेंगे । इससे प्रत्येक व्यक्ति का स्वयं का मानसिक व्यायाम होगा तथा उसकी सोचने की शक्ति का जागरण होता जायेगा ।

कार्यक्रम में रामकृष्ण जी पटेल ने परिचय कराया अशोक जायसवाल ने मुनि जी से आग्रह किया कि तीन दिन कथा को बढ़ा दे । मुनि जी ने आश्वासन दिया कि अठारह दिसम्बर से चौबीस दिसम्बर तक सात दिन की कथा फिर से रामानुजगंज में रख देंगे । मुनि जी ने निवेदन

किया कि नगर सभा के पंद्रह सदस्य इस प्रकार सक्रिय हो कि नगर की सभी समस्याओं का समाधान हो सके । अजय सोनी, तिवारी जी, सनाउल्लह जी, अशोक जायसवाल ने आश्वासन दिया और इस तरह नगर सभा कि तत्काल एक बैठक भी पूरी हुई । ज्ञान कथा के प्रबंधक अरविन्द सिन्हा, अजय केशरी, अवधेश गुप्त आदि ने कथा की सफलता के प्रति संतोष व्यक्त किया। पहले दिन से श्रोताओं की भीड़ लगातार बढ़ती गई जो अंतिम दिन एक मेले के रूप में बदल गई । झारखण्ड के भी कई प्रमुख लोगों ने सक्रिय भाग लिया इससे स्पष्ट हुआ कि समाज सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। इस तरह इस ज्ञान कथा का सफलता पूर्वक समापन हुआ ।